ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

''सम्प्रेशण कौशल एवं आत्मविश्वास का अध्ययन''

KEY WORDS: सम्प्रेशण, आत्मविश्वास, तकनिक, कम्प्यूटर, इंटरनेट

श्रीमती कमलेश यादव (शोधार्थी)शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

डॉ. अनिल कुमार (सह आचार्य)शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

ABSTRACT

सम्प्रेशण के बिना विचार चाहे वह कितना ही महान् क्यों न हो, तब तक बेकार है जब तक कि उसे स्थानान्तरित करके दूसरे के द्वारा समझा न गया हो । सम्प्रेशण को एक ऐसे साधन के रूप में देखा जा सकता है जिससे लोग संस्था में एक संयुक्त उद्देश्य को अर्जित करने के लिए आपस में जुड़ जाते हैं। सम्प्रेशण की अनुपस्थिति में समूह गतिविधि या क्रिया असम्भव है। सम्प्रेशण किसी संस्था की कार्यप्रणाली के लिए आवश्यक है क्योंकि यह प्रबन्धात्मक कार्यों को एकीकृत करता है। आत्मविश्वास वस्तुतः एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है। आत्मवि वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है और इसके कारण ही महान् कार्यों के सम्पादन में सरलता और सफलता मिलती है।

भारतीय संस्कृति में शिक्षा को पवित्र कर्म माना गया है। शिक्षक द्वारा अर्जित ज्ञान एवं अनुभव शिक्षार्थी को हस्तान्तरित किया जाता है। शिक्षक शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण करने का कार्य करता है।

भारतीय वाङ्मय में गुरू का स्थान ''गोविन्द'' अर्थात् भगवान से भी ऊँचा बताया गया है। भारतीय संस्कृति में शिक्षक को सर्वोच्च स्थान दिया गया है, उसे ब्रह्मा और विश्णु से भी अधिक सम्माननीय व पूजनीय बताया गया है। इस सन्दर्भ में कबीर दास का यह दोहा प्रचलित है –

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय।।

भारत में आचार्य धौम्य, गुरू संदीपनी, गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर, डॉ. राधाकृश्णन एवं डॉ. अब्दुल कलाम आदि कई महान् शिक्षक हुए हैं, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में उच्चाद श एवं त्यागमय जीवन को प्रतिस्थापित किया है और भावी शिक्षकों के लिए प्रकाश स्तम्भ के सदृश्य हैं।

'भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है।' यह हमारा विश्वास है, कोई चमत्कारोक्ति नहीं है। विज्ञान और शिल्प विज्ञान पर आधारित इस दुविधा में, शिक्षा ही लोगों की खुशहाली, कल्याण और सुरक्षा के स्तर का निर्धारण करती है। हमारे विद्यालयों और महाविद्यालयों से निकलने वाले विद्यार्थियों की योग्यता और संख्या पर ही राश्ट्रीय पुल निर्माण के इस महत्वपूर्ण कार्य की सफलता निर्भर करेगी, जिसका प्रमुख लक्ष्य हमारे रहन–सहन का स्तर ऊँचा उठाना है।

आज की शिक्षा में शिक्षक अपने को केवल पुस्तकीय ज्ञान या पाठ्यक्रम तक ही सीमित नहीं रख सकता। शिक्षण प्रक्रिया में आज ऐसी नव शिक्षक पीढ़ी का नव निर्माण करना आवश्यक है जिसे न केवल अपने विशय पर एकाधिकार हो, बल्कि वह विद्यार्थियों की सभी बौद्धिक जिज्ञासा को परिपूर्ण करता हो, उसे अपने शिक्षण में दूरदर्शन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, सेटेलाइट, ई–मेल, फैक्स आदि आधुनिक सूचना माध्यमों से अपने को परिपूर्ण रखें तथा शिक्षणाभ्यास में भी नये–नये सूचना के संसाधनो से अपने को परिपूर्ण रखें ।

रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार, :–''शिक्षा का अर्थ मस्तिश्क को इस योग्य बनाना है कि वह सत्य की खोज कर सकें, उसके साथ एक रूप हो सकें और उसे अभिव्यक्त कर सकें ।''

महात्मा गांधी के अनुसार;–''शिक्षा से मेरा तात्पर्य व्यक्ति के भारीर,मन और आत्मा का विकास है।''

अरविन्द के अनुसार :–''बालक की शिक्षा उसकी प्रकृति में जो कुछ सर्वोत्तम सर्वाधिक भाक्ति शाली, सर्वाधिक अंतरंग और जीवनपूर्ण है उसको अभिव्यक्त करना होना चाहिए। वह उसके अंतरंग गुण और भाक्ति का सांचा है।''

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान के प्रभाव से ही मानव पक्षी की तरह आकाश में उड़ता है तथा मछली की भाँति अथाह सागर में तैरता है। सूचना व संचार के साधनों के माध्यम से सम्पूर्ण संसार एक परिवार की भाँति नजर आता है अर्थात् सिमटता हुआ संसार दिखाई देता हैं सूचना व संवेग वर्तमान युग में तीव्र गति से विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में प्रसारित हो रहे हैं। आज संचार के साधनों के माध्यम से सूचना पहुंचाना सरल और सुगम ही नहीं, अपितु समय और धन की बचत भी करता है। सूचनाओं का प्रसारण वृहद् स्तर पर करने के लिए इन बहुआयामी साधनों का प्रयोग किया जाता है। संचार के साधन – टेलीफोन, मोबाईल, ई–मेल, इन्टरनेट, कम्प्यूटर, टेली–प्रिन्टर, दूरदर्शन इत्यादि साधनों से अभूतपूर्व क्रान्ति दृश्टिगत होती है। मोबाईल के द्वारा त्वरित गति से सूचनाओं का संचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि आज सभी लोग दुनिया को अपनी मुट्ठी में करना चाहते है। सूचना व संचार प्रौद्योगिकी विकास आज सभी कार्यालयों, विभागों और संस्थाओं में भरपूर रूप से हो रहा है।

विद्यालयी शिक्षा भी सूचना व प्रौद्योगिकी के प्रभाव से अछूती नहीं है। हजारों अप्रशिक्षित शिक्षकों के प्रशिक्षण, मुफ्त शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा (पत्राचार) पाठ्यक्रम निर्माण, पाठ योजना, कक्षा–शिक्षण, परीक्षा के प्रश्न–पत्र, अंक–तालिका, प्रमाण–पत्र, परिणाम इत्यादि क्षेत्रों में इन साधनों का प्रयोग बहुधा हो रहा है। विद्यालय शिक्षा में कम्प्यूटर शिक्षा को पाठ्यक्रम में भामिल करके आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नया अध्याय जोड़ा गया है। आज का विद्यालयी छात्र इन्टरनेट और ई–मेल के माध्यम से नित नई खगोलीय, भौगोलिक, वैज्ञानिक और सामान्य ज्ञान की जानकारी प्राप्त करके अपनी ज्ञान राशि का विस्तार कर रहा है। आज शिक्षार्थी को सूचना व प्रौद्योगिकी के साधनों के माध्यम से शिक्षण अधिगम, प्रभावी सम्प्रेशण और शिक्षा में नवाचारों से भीघ्राति ा शीघ्र जानकारी उपलब्ध हो रही है।

हमारे देश में सन् 1984 ई. में कम्प्यूटर नीति की घोशणा कर दी गई थी। इसी घोशणा से भारत में कम्प्यूटर क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। वर्तमान में कम्प्यूटर भारत में चहुँमुखी विकास के पथ पर उत्तरोत्तर गतिाील है। आज भारत में प्रति 100 लोगों पर 0.58 कम्प्यूटर हैं। वह दिन दूर नहीं जब टेलीविजन की तरह कम्प्यूटर प्रत्येक घर की आव यकता बन जाएगी। कम्प्यूटर क्रान्ति को भारतीय सन्दर्भ में इस रूप में भी रेखांकित किया जा सकता है कि वर्श 2019–20 में भारत ने सॉफ्टवेयर उद्योग में 80: की वृद्धि दर दिखाई है। बीसवीं भाताब्दी के पूर्वार्द्ध तक सम्पूर्ण विश्व औद्योगिक क्रान्ति से संचालित होता रहा परन्तु इसके बाद से विश्व व्यवसाय में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। आज ऐसा प्रतीत हो रहा है कि 21वीं भाताब्दी कम्प्यूटर युग के नाम से ही जानी जाएगी।

भारत में कम्प्यूटर का अद्भुत विकास देख कर भारत की राजकीय यात्रा पर आए तत्कालीन अमेरिकी राश्ट्रपति बिल क्लिन्टन ने कहा था कि ''पहले चिप्स खाने की चीज हुआ करती थी लेकिन अब चिप्स से सारी दुनिया को चलाते हैं।'' यह बात उन्होंने मजाक में जरूर कही थी लेकिन इससे कम्प्यूटर तथा कम्प्यूटर चिप का दिनों दिन बढ़ता प्रभाव स्पश्ट होता है। आज कम्प्यूटर जोड़, घटाव, गुणा, भाग करने वाली माशीन मात्र ही नहीं बल्कि यह अन्य अनेकानेक विशयों पर अविश्वसनीय गति से कार्य पूर्ण करने में सक्षम है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी पहचान करा रहा कम्प्यूटर मानव इतिहास की सबसे बड़ी उपलब्धि का दर्जा पा चुका है। शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर की भूमिका महत्वपूर्ण होती जा रही है। आज सम्पूर्ण शिक्षा कम्प्यूटरमय बन गई है। विद्या वाहिनी व ज्ञान वाहिनी कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षा में कम्प्यूटर का उपयोग बढ़ाया जा रहा है। इस योजना के माध्यम से देश के सात जिलों के लगभग 200 उच्चत्र माध्यमिक विद्यालयों में दिल्ली विश्वविद्यालय के परिसर में नेटवर्क तैयार करने की प्रायोगिक परियोजनाएँ आरम्भ की जा चुकी है। इसमें कम्प्यूटर, प्रयोगशाला एवं उन्हें इन्टरनेट से जोड़ने सम्बन्धी कार्य सम्मिलित हैं। कम्प्यूटरों के माध्यम से कक्षाओं में शिक्षण विधियों को सरल और उपयोगी बनाया जा रहा है। सुदूर शिक्षा के लिए भारत में एजुसेट **(EDUSAT)** नामक उपग्रह प्रक्षेपित किया गया है।

Indian Stastistical Institute (ISI) की भाखा कम्प्यूटर विजन एण्ड पैटर्न रिकॉग्नाईजेशन ने देश के लाखों नेत्रहीन विद्यार्थियों के लिए कम्प्यूटर इस्तेमाल की संभावनाओं को बढ़ाने वाला सॉफ्टवेयर तैयार किया है। कोलकाता में तैयार यह सॉफ्टवेयर फिलहाल 20 राज्यों में उपलब्ध है। इस सॉफ्टवेयर की मदद से नेत्रहीन ब्रेल की–कोर्ड के जरिए टाइप कर सकेंगे। उनके द्वारा किया गया ज्मगज उन्हें ध्वनि के रूप में सुनाई देगा। जिससे वे उनमें आव यक परिवर्तन कर सकेंगे।

पहले हमें शिक्षा से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए पूर्ण रूप से पुस्तकों पर निर्भर रहना पड़ता था। लेकिन अब इन्टरनेट सफरिंग का युग आ जाने से हम किसी भी शिक्षण संस्थान या विशय के बारें में वेबसाइटों के जरिए कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

मनुश्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे अपने विचार और भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए सम्प्रेषण पर निर्भर रहना पड़ता है। दूसरे शब्दों में सम्प्रेषण मनुश्य की अनिवार्य आवश्यकता और उसके सामाजिक जीवन का आधार भी है।सामाजिक व्यवहार के लिए मनुश्य को एक दूसरे से संवाद स्थापित करना पड़ता है इसलिए सम्प्रेषण द्वारा ही मानव समाज की संचालन प्रक्रिया संभव बनती है। इसके अभाव में मानव समाज की कल्पना नहीं की जा सकती तथा इसके बिना किसी भी समाज का निर्माण संभव नही है।

सम्प्रेषण का प्रारंभ मानव जीवन के आविर्भाव के साथ होता है और जीवन पर्यंत सम्प्रेषण का महत्त्व बना रहता है। सम्प्रेषण मनुश्यों तक ही सीमित नही है बल्कि इसका इतिहास इससे भी पुराना है। पशु–पक्षी भी अपनी आवश्यकता के अनुसार सम्प्रेषण करते रहे हैं। उसी तरह मनुश्य भी इशारों और ध्वनियों के माध्यम से सम्प्रेषण करना प्रारंभ करता है, आगे चलकर मनुश्यों ने भाशा और उसे अभिव्यक्त करने वाले संकेत–चिह्नों को सम्प्रेषण का माध्यम बनाया। समय के साथ जैसे–जैसे तकनीकी का विकास होता गया वैसे–वैसे सम्प्रेषण की प्रक्रिया में भी परिवर्तन होता गया और इसके माध्यम भी विकसित होते गए। कहने का अर्थ यह है कि मानव सभ्यता और सम्प्रेषण माध्यमों का विकास समांतर रूप से विकसित होता गया।

इस तरह मनुश्यों ने सम्प्रेषण की प्रक्रिया अंतवैयक्तिक सम्प्रेषण से प्रारम्भ की, जो समूह सम्प्रेषण से आगे बढ़ती हुई आज प्रिंट माध्यम और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जन सम्प्रेषण तक विकसित हो गई है। जीव जगत में मनुश्य ही ऐसा प्राणी है जो अपने विचारों को शब्दों के द्वारा मौखिक और लिखित दोनों रूपों में व्यक्त कर सकता है।

आज सम्प्रेषण का महत्त्व हमारे जीवन के सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक एवं शिक्षा जैसे क्षेत्रों में बढ़ गया है। तकनीकी विकास ने इसके महत्त्व को ओर बढ़ा दिया है, ज्ञान–विज्ञान और सूचना को लोगों तक पहुंचाने में सम्प्रेषण की उपयोगिता बढ़ गई है। साथ ही इसके समक्ष यह चुनौती भी है कि कैसे सूचना को सरल, सुगम और कम से कम समय में जन सुलभ बनाया जाए। भोजन–पानी, मकान और कपड़ा की तरह सम्प्रेषण भी हमारी मूलभूत आवश्यकता बन गई है। परिवार से लेकर जन समूह, राष्ट्र या विश्व तक के सुचारू संचालन में सम्प्रेषण की महत्ती भूमिका है, इसके अभाव में न समाज टिक सकता है और न ही राष्ट्र या विश्व।

कोई भी विचार चाहे वह कितना ही महान् क्यों न हो, तब तक बेकार है जब तक कि उसे स्थानान्तरित करके दूसरे के द्वारा समझा न गया हो । सम्प्रेशण पूर्ण रूप से उस स्थिति में होता है। किसी संगठन में सम्प्रेशण को एक ऐसे साधन के रूप में देखा जा सकता है जिससे लोग संस्था में एक संयुक्त उद्देश्य को अर्जित करने के लिए आपस में जुड़ जाते हैं । सम्प्रेशण की अनुपस्थिति में समूह गतिविधि या क्रिया असम्भव है। सम्प्रेशण किसी संस्था की कार्यप्रणाली के लिए आवश्यक है क्योंकि यह प्रबन्धात्मक कार्यों को एकीकृत करता है।

आत्मविश्वास वस्तुतः एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है। आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है और इसके कारण ही महान् कार्यों के सम्पादन में सरलता और सफलता मिलती है। इसी के द्वारा आत्मरक्षा होती है। जो व्यक्ति आत्मविश्वास से ओत–प्रोत है, उसे अपने भविश्य के प्रति किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रहती। दूसरे व्यक्ति जो संदेहों और भांकाओं से दबे रहते हैं, वे आत्मविश्वास से सदैव मुक्त रहते है।यदि व्यक्ति कोई महान् कार्य करना चाहते हैं तो सबसे पहले मन में स्वाधीनता के विचार भरे। जिस मनुश्य का मन संदेह, चिन्ता और भय से भरा हो, वह महान् कार्य तो क्या, कोई सामान्य कार्य भी नहीं कर सकता। संदेह और सश्य व्यक्ति के मन को कभी भी एकाग्र नहीं होने देंगे। मन की एकाग्रता कार्य–सम्पादन के लिए आव यक भार्ते है। सभी अध्यापकों के लिए आत्मविश्वास उनकी भावी सफलता का सम्बल बनता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. भटनागर, ए.बी. एवं भटनागर मीनाक्षी (2004), ''शिक्षण व अधिगम का मनोविज्ञान'' आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ, चतुर्थ संस्करण, पृश्ठ संख्या –31ए 54ण
2. गुप्ता, डॉ. वि ोश (2010), ''वर्तमान भौक्षिक परिदृ य पर चिन्तन की जरूरत'', पंचजन्य पृश्ठ संख्या –48, 31
3. मेहता, रामसहाय, ''आधुनिक शिक्षकों के विचार'', राष्ट्रदूत 20 नवम्बर, 2001, पृ.सं. 4
4. भारत–दिग्दर्शन, भारत–संघ, खण्ड–एक, देश और देश के लोग" (1972) : सूचना एवं प्रसारण पंत्रालय, भारत सरकार, पृ.सं 581